राम-रहीम और फोमांचू की पराजय

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम

मनोज कॉमिक्स

VIJAY KADAM

राम-रहीम और फोमांचू की पराजय

डबल सीक्रेट एजेंट 00½
राम-रहीम.

लेखक : बिमल चटर्जी | चित्रांकन: दिलीप कदम, हरिश्चन्द्र चव्हाण | प्रियल कॉमिक्स

एक रात जब कलियुग के भगवान फोमांचू ने आकर राम-रहीम को चैलेंज किया कि वह हिन्दुस्तान के महान् वैज्ञानिक प्रोफेसर भास्कर का अपहरण करके ले जायेगा। तो राम ने उस पर गोलियों की बौछार कर दी।

हा—हा—हा! तुम्हारी इन गोलियों का मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

और फोमांचू अदृश्य हो गया।

फोमांचू ने प्रोफेसर भास्कर के अपहरण के लिए उसी को अपना मोहरा बनाया।
यदि तुमने मेरा साथ दिया तो मेरी वजह से तुम्हारा जितना नुकसान हुआ है, उसकी पूर्ति मैं करूंगा।
ठीक है। यह सौदा मुझे मंजूर है।

नुसार जोगाम्बो और उसके साथियो ने प्रोफेसर भास्कर के निवास स्थान पर आक्रमण किया।
धांय...धांय...!
धुड़म!
धड़ाम!
आई...ई...ई!
उफ!

सुरक्षाकर्मियों को जोगाम्बो व उसके साथियों से उलझा पाकर फोमांचू मौके का फायदा उठाते हुए प्रोफेसर के विशेष कमरे में पहुंचा।
हा-हा-हा! अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता प्रोफेसर! तुम्हें मेरे साथ चलना ही होगा।
पहले अपनी खैर मनाओ चचा!

और फोमांचू प्रोफेसर भास्कर द्वारा बिछाए गये किरणों के जाल में फंस गया।
हा-हा-हा!
उफ! तो यह जाल बिछाया है तुम लोगों ने मुझे फांसने का शैतानो! खैर, फिलहाल तो मैं जा रहा हूं, लेकिन जल्द ही तुम सबसे निपटूंगा।

अपनी इस असफलता से झुंझलाकर फो ने राम-रहीम को मौत के घाट उतारने लिए अपना सुदर्शन चक्र छोड़ा।
हा-हा-हा! अब तुम दोनों हरगिज नहीं बचोगे। भागो, और भागो! देखता हूं, तुम्हारे पैरों में कितना दम है।

लेकिन राम-रहीम मजबूरी में एक नदी में कूदकर मरने से बच गये।

तब एक दिन राम-रहीम को मौत के घाट उतारने के लिए फोमांचू फिर उनके घर जा धमका।
अरे, दोनों बिस्तर तो खाली हैं। कहां गये वे दोनों शैतान छोकरे।
प्यारे दोस्तो, यहां तक की कथा आप मनोज कॉमिक्स के गत चार अंकों "फोमांचू दी ग्रेट", "कलियुग का भगवान्", "एक आंख वाला शैतान" और "मौत का हंगामा" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।

कुछ सोचकर फोमांचू अन्य कमरों में झांकने लगा।
यह कमरा भी खाली है। खैर, वे अपने चचा के हाथों बचकर जायेंगे कहां? आज उनकी मौत निश्चित है। हां, यदि वे दोनों मेरे पैरों पर पड़कर माफी मांग लें और आइन्दा से मुझसे न टकराने का वायदा कर लें तो बात दूसरी है।

कई कमरों में झांकने के बाद—
न जाने कमबख्त कहां जा छुपे हैं। उनकी मां भी तो दिखाई नहीं दे रही। बस, चैक करने के लिए अब यही एकमात्र कमरा बचा है।

ओह! यह अन्दर से बंद है। इसका मतलब हुआ कि इस कमरे में जरूर कोई है।

अगले ही पल फोमांचू रोशन छाके में परिवर्तित हुआ और...

...दरवाजे को भेदता हुआ कमरे के भीतर पहुंच गया।
अरे! यहां तो केवल उनकी माता ही है, लेकिन वे दोनों कहां गये?

लगता है, मौत के भय से वे दोनों कहीं और चले गये हैं। खैर, कोई बात नहीं। अब इनकी मां ही बतायेगी कि वे कहां जाकर छिपे हैं।
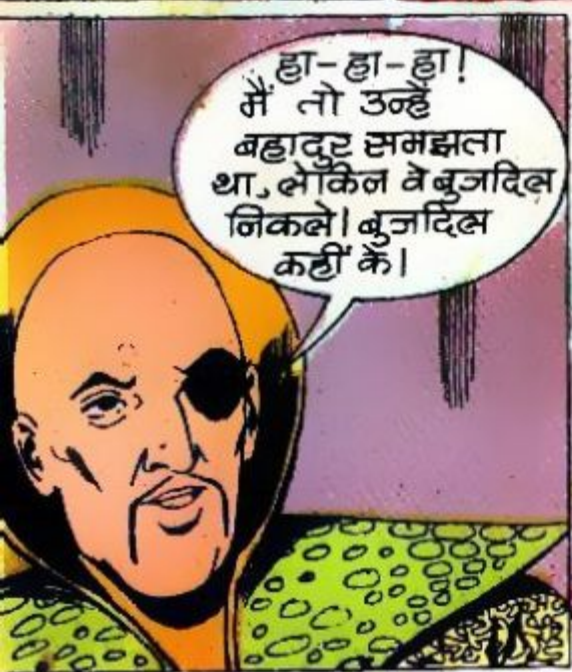
हा-हा-हा! मैं तो उन्हें बहादुर समझता था, लेकिन वे बुजदिल निकले। बुजदिल कहीं के।

फोमांचू का भयानक अट्टहास सुनते ही राधादेवी की आंख खुल गई।
क... क... कौन हो तुम और क्या चाहते हो?
हा-हा-हा! सेवक को फोमांचू कहते हैं। यदि तुम अपनी भलाई चाहती हो तो अपने उन दोनों छोकरों के बारे में बता दो कि कहां भगा दिया है तुमने उन्हें?

ओह! तो यही है फोमांचू। हे भगवान, अब मैं क्या करूं? कैसे भगाऊं इसे यहां से?

ध्यान रहे देवी! मुझसे झूठ बोलने की कोशिश मत करना। क्योंकि मुझे झूठ से सख्त नफरत है।
वे अपने एक दोस्त की बहन की शादी में गये हुए हैं।

उस दोस्त का नाम और अता-पता क्या है?
यह तो वे नालायक मुझे भी बताकर नहीं गये।

देवी, मैं पहले ही कह चुका हूं कि मुझे झूठ से सख्त नफरत है। अतः सच बता दो, वरना उनसे पहले मेरे हाथों तुम मारी जाओगी।
मैं सच कह रही हूं। उन दोनों की इस आदत के कारण मैं स्वयं अक्सर परेशान रहती हूं।
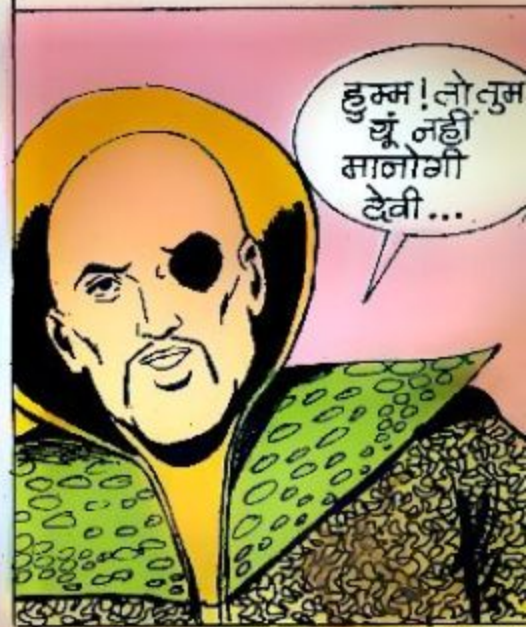
हुम्म! तो तुम यूं नहीं मानोगी देवी...

...और मुझे सख्ती से काम लेना होगा?
नहीं-नहीं, मैं कहती हूं, आगे मत बढ़ो।

परन्तु इससे पहले कि फोमांचू राधादेवी के साथ कोई सख्ती कर पाता—
ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन
ओह! फोन।
तुम यहीं रहोगी। फोन मैं रिसीव करूंगा।

फिर रिसीवर उठाकर फोमांचू ने अपने कंठ से जो आवाज निकाली, उसे सुनकर राधादेवी चौंक उठीं।
हैलो! राधा राघव हेयर।
हैं! यह तो बिल्कुल मेरी आवाज है।

मम्मी! मैं राम बोल रहा हूं। तुम ठीक तो हो न? फोमांचू तो वहां नहीं पहुंचा था?
मैं बिल्कुल ठीक हूं बेटे, लेकिन तुम कहां से बोल रहे हो?
???

हे भगवान! जरूर दूसरी ओर राम-रहीम में से कोई है?

यह तुम क्या कह रही हो मम्मी? हम तो तुम्हें बताकर ही गये थे कि हम प्रोफेसर भास्कर की कोठी पर जा रहे हैं।
अरे हां, ध्यान आया...

...अब तुम्हें क्या बताऊं बेटा! फोमांचू का नाम सुनते ही मेरे होशहवास उड़ जाते हैं। खैर, तुम दोनों ठीक तो हो न?
ओह! दूसरी ओर राम-रहीम ही हैं, वरना यह उन्हें मेरी आवाज में बेटा कहकर सम्बोधित न करता।

दूसरी ओर —
कुछ घपला मालूम होता है। मम्मी की आवाज में जरा भी कम्पन नहीं, जबकि वह भयभीत होने की बात कर रही हैं।

अरे! तुम अचानक खामोश क्यों हो गये?
कोई खास बात नहीं! रहीम आपको आदाब कह रहा था...

...अच्छा मम्मी, मैं फोन रख रहा हूं। यहां हम दोनों बिल्कुल ठीक-ठाक हैं। कल सुबह फिर फोन करूंगा।
कहकर राम ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

रहीम, जो कि गौर से राम की बातचीत सुन रहा था, यकायक राम को रिसीवर क्रेडिल पर रखते देख चौंक उठा।
क्या हुआ राम भइया? यह तुमने इतनी जल्दी फोन क्यों रख दिया?
मुझे घर में कुछ गड़बड़ हुई लगती है रहीम।

क्या मतलब?

मुझे शक है कि दूसरी ओर से मम्मी नहीं, बल्कि उनकी आवाज में कोई और बात कर रहा था।

क्याऽऽऽ?
यह तुम क्या कह रहे हो राम बेटे?
एक मिनट ठहरिये अंकल! मैं अपने संदेह की पुष्टि फिर एक बार घर फोन करके किये लेता हूं।

राम ने दुबारा घर के नम्बर डायल किये। सम्पर्क स्थापित होने पर—
हैलो, कौन बोल रहा है?
मैं राम बोल रहा हूं मम्मी! आप खैरियत से तो हैं ना!

मैं तो ठीक हूं बेटे, लेकिन तुम दोनों की ओर से चिन्तित हूं। अच्छा हुआ तुमने दुबारा फोन कर लिया! अभी कुछ देर पहले फोमांचू यहां आया था और उसी ने मेरी आवाज में तुमसे बातचीत की थी।
क्याऽऽऽ?

हां बेटे, और वह यह जानकर कि तुम प्रोफेसर भाई साहब के घर हो, शायद वहीं गया है।
हुम्म! तो मेरा संदेह ठीक ही निकला!
???
!!!
ठीक है मम्मी, आप हमारी चिन्ता न करें। यदि वह यहां आया तो हम उससे अच्छी तरह निपट लेंगे। बस, आप अपना ध्यान रखना।
अच्छा बेटे, ईश्वर तुम लोगों की रक्षा करे!

सम्बन्ध विच्छेद करने के बाद राम ने झटपट चीफ मुखर्जी के नम्बर डायल किये और उन्हें सारी स्थिति से अवगत कराया।
तुम चिन्ता मत करो माई बॉय! मैं अभी पूरी तैयारियों के साथ वहां पहुंचता हूं।
ओ.के. चीफ! हम आपका इंतजार कर रहे हैं।
बातचीत खत्म करने के बाद –
अंकल! फोमांचू किसी भी क्षण यहां पहुंच सकता है। अतः हमें आपके स्ट्रॉंग रूम यानी शीशे वाले कक्ष में पहुंच जाना चाहिए।
ठीक है, चलो।

ठीक तभी–
हा–हा–हा! इतनी जल्दी भी क्या है भतीजो! जरा अपने चचा के दर्शन तो करते जाओ।
ओह! शैतान याद करते ही हाजिर हो गया।
फोमांचू!

मेरे चालाक भतीजो, तुमने मेरी आंखों में धूल झोंकने की कोशिश तो बहुत की, लेकिन मैं भी तुम्हारा चचा हूं। आखिर तुम्हें खोज ही लिया।
आंखों में मत कहो चचा क्योंकि तुम्हारे दो नहीं, सिर्फ एक ही आंख है।

शटअप, गुस्ताख लड़के।

प्यारे चचा, दोनों जुबान एकसाथ मत बोलो, या तो इंगलिश में बात करो या फिर हिन्दी में, वरना हमारी खोपड़ी खराब हो जायेगी।
ठीक है भतीजे खूब चहक लो, क्योंकि उसके बाद तुम्हें फिर चहकने का मौका नहीं मिलेगा।

आज तो अपनी खैरियत मनाओ चचा। आज तुम यहां से बचकर नही जा सकते।

राम-रहीम ने अपनी-अपनी पोशाक के सीने पर लगे एक बटन को दबा दिया।

समझ गया, यह फैन्सी-सी दिखने वाली पोशाक कोई साधारण पोशाक नहीं है, बल्कि इसमें कुछ खूबियां हैं। शायद तुम दोनों अपने आपको इस पोशाक में सुरक्षित महसूस कर रहे होगे।
तुम बिल्कुल ठीक समझे चचा। अब तुम्हारा कोई भी हथियार हम पर प्रभावहीन साबित होगा।

तभी कोमांचू ने अपने चक्र वाले हाथ पर चढ़े दास्ताने पर लगे दो बटनों को बारी-बारी से दबाया और—

लेकिन चक्र प्रोफेसर की गरदन के निकट पहुंचकर अदृश्य तरंगों से टकराकर...

...वापस लौट पड़ा।

हा-हा-हा! क्यों चचा, देख लिया अपने चक्र की शक्ति का कमाल।
ओह! इसका मतलब यह हुआ कि प्रोफेसर ने इसकी विरोधी तरंगें तैयार कर ली हैं।
हा-हा-हा!
ज्यादा मत हंसो। बेशक तुमने मेरी एक शक्ति बेकार कर दी है, लेकिन तुम लोग मेरी दूसरी शक्ति से हरगिज नहीं बच पाओगे।
चचा, शायद तुम अपने माथे की कृत्रिम आंख का जिक्र कर रहे हो?
हां भतीजो, वह तुम्हारे भगवान शिवजी जी की तीसरी आंख के समान ही प्रलयंकारी है।

क्यों फिजूल की बकवास कर रहे हो चचा। कहां भगवान् शिव और कहां तुम एक नीच व तुच्छ मानव। भला तुम भगवान् का क्या मुकाबला करोगे।

हा-हा-हा!
खामोश!

क्रोध से आग-बबूला हो फोमांचू ने अपनी इकलौती आंख बंद की और ...

... अगले ही पल—

राम-रहीम, मेरे बच्चो!
हा-हा-हा!

लेकिन कुछ देर बाद जब कोमांचू ने अपनी कृत्रिम आंख बंद करके इकलौती आंख खोली-

नहीं, मेरे शरीर को छूने की चेष्टा मत करना, वरना...।

धप्प!
आह!

क्यों चचा, कैसा लगा हमारा पहला वार?
त... तुम ...तुमने मेरे शरीर को छू कैसे लिया?
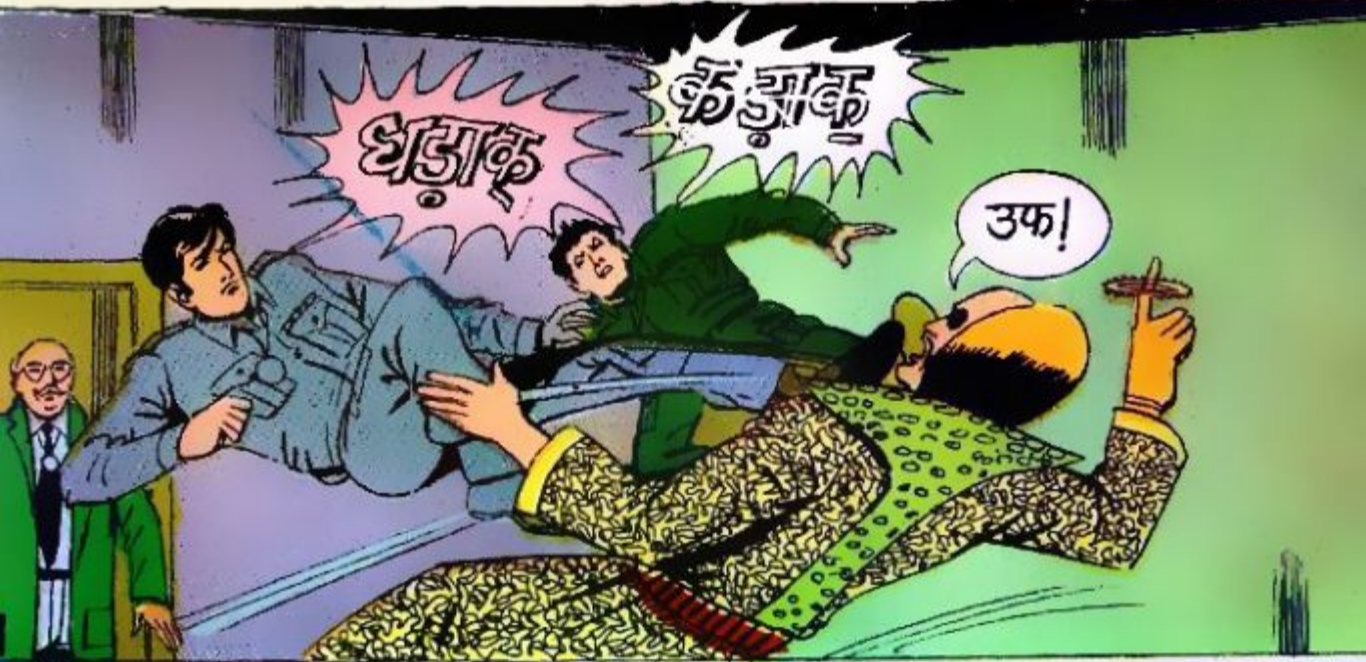
चकित मत हो चचा! इस समय हम भी ऐसी ही अदृश्य किरणों के घेरे में हैं, जिनमें तुम हो। अतः उन किरणों के टकराने से हम तीनों ही उन किरणों से मुक्त हो गये हैं और नतीजा तुम्हारे सामने है।

ओह!

कहने के साथ ही फोमांचू ने अदृश्य होने वाला बटन दबाना चाहा—

अरे चचा, यहां से भागने की इतनी जल्दी भी क्या है?
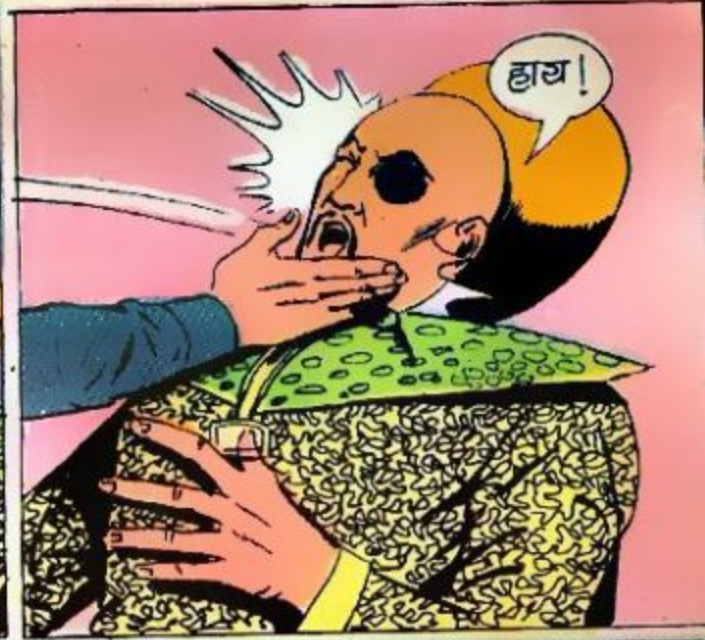
तड़ाक्!

उफ! मरा!

अबे कलियुगी भगवान, अब हम तुझे कलियुग का जोकर बनाकर ही छोड़ेंगे।

फोमांचू, यदि तुम अपनी भलाई चाहते हो तो प्रोफेसर अंकल को छोड़ दो। और हम तुम्हें अपनी जान बचाकर भागने का मौका भी देते हैं।

तभी चीफ मुखर्जी कई सशस्त्र कमाण्डो के साथ वहां आ पहुंचे।

राम-रहीम, यहां सब ठीक-ठाक तो है ना?

ओह! चीफ!

आपने आने में देर कर दी अंकल! फोमांचू प्रोफेसर अंकल का अपहरण कर ले जाने में सफल हो गया है।
ओ नो! यह सब कैसे हुआ?
तब राम ने उन्हें सारी बात बता दी।

सबकुछ सुनकर चीफ मुखर्जी चिंतित हो उठे।
यह बहुत बुरा हुआ! प्रोफेसर भास्कर देश के महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं। यदि उन्हें कुछ हो गया तो हमारा देश एक अमूल्य रत्न से हाथ धो बैठेगा और...!
आप ठीक कह रहे हैं अंकल, लेकिन मुश्किल तो यह है कि फोमांचू के ठिकाने के बारे में पता न होने के कारण हम उनकी मदद भी तो नहीं कर सकते।

तभी राम के दिमाग में अकस्मात् कोई बात आई और वह बोल उठा—
चिंता मत करो। ईश्वर ने चाहा तो हमें फोमांचू के ठिकाने के बारे में जल्दी ही मालूम हो जायेगा।
लेकिन कैसे?

स्वयं प्रोफेसर अंकल द्वारा। आइये, हम उनकी प्रयोगशाला में चलें।

और कुछ न समझते हुए भी सभी राम के पीछे-पीछे प्रोफेसर भास्कर की प्रयोगशाला की ओर चल पड़े।

और लगभग बीस मिनट के इन्तजार के बाद प्रकाशमान टी.वी. स्क्रीन पर प्रोफेसर भास्कर का चेहरा उभरा और राम ने टी.वी. से जुड़ा माइक्रोफोन हाथ में ले लिया।

राम, क्या तुम मेरी आवाज सुन रहे हो?

मैं आपकी आवाज सिर्फ सुन ही नहीं रहा हूं अंकल, बल्कि आपको देख भी रहा हूं...

और टी.वी. से प्रोफेसर के चेहरे के साथ-साथ आवाज भी गायब हो गई।

राम ने टी.वी.ऑफ कर दिया।
अंकल, समय कम है। आप फोर्स के साथ गाड़ियों द्वारा भूतिया हवेली पहुंचिये। रहीम और मैं उड़कर पंहुंचते हैं।
ठीक है।

राम और रहीम प्रयोगशाला से बाहर निकले और अपने-अपने सीने पर लगे उडने वाले बटन को दबाया। अगले ही पल-
???

उनके नजरों से ओझल होने के बाद-
मेरे विचार से अब हमें भी देर नहीं करनी चाहिए।
यस सर।

और कुछ देर बाद बहादुर लड़ाकों से लदी कई गाड़ियां भूतिया हवेली की ओर दौड़ी जा रही थी।

उधर लगभग आधा घण्टे की उड़ान के बाद-
यही है वह भूतिया हवेली, नीचे उतरो।
ठीक है।

एक अन्य बटन को दबाकर राम-रहीम हवेली की छत पर उतर गये।

मेरे विचार से नीचे जाने के लिये सीढ़ियां यहीं-कहीं होनी चाहिए।
ठहरो, मैं टॉर्च निकालता हूं।

रहीम ने टॉर्च निकालकर जलाई और दोनों उसके प्रकाश में सीढ़ी की खोज करने लगे। शीघ्र ही -
यह रही सीढ़ियां।
सतर्कता से नीचे उतर चलो।

दोनों सीढ़ियां उतरकर हवेली के भीतर पहुंच गये।

फिर कई टूटे-फूटे कमरों का निरीक्षण करने के पश्चात्-
वह देखो राम भइया! उस कमरे से रोशनी आ रही है।
धीरे बोलो।

और जब उन्होंने प्रकाश वाले उस कमरे में झांका—
अरे, कोमांचू!

अच्छा यही होगा कि इसके जागने से पहले ही इसे बेहोश कर दिया जाये। वरना यह फिर कोई ऊधम मचाकर निकल भागेगा।
ठीक कहते हो। आओ, भीतर चलें।

राम-रहीम बिना कोई आहट किये भीतर पहुंचे और इससे पहले कि कोमांचू को उनकी उपस्थिति का आभास हो पाता, रहीम ने एक छोटी-सी गन निकालकर उसका घोड़ा दबा दिया।
फिस्... फिस्...!

बस करो। यह बेहोश हो चुका है।
शुक्र है, शैतान का बच्चा आसानी से गिरफ्त में आ गया।
फिस्स... फिस्स।

शीघ्र ही एक कमरे में उसे प्रोफेसर मिल गये।

एक-दूसरे को अपना हाल-चाल बताने के बाद—

कोमांचू को हमने बेहोश कर दिया है। आइये, वहीं चलते हैं।

चलो, मैं भी उसे जरा निकट से देखना चाहता हूं।

फोमांचू वाले कमरे में पहुंचकर-
अच्छा हुआ यह शैतान जीवित ही पकड़ में आ गया। अब मैं इसकी तीसरी आंख का परीक्षण कर इसका रहस्य जान सकूंगा।
और मुझे खुशी है कि इसका सुदर्शन चक्र व विशेष पोशाक भी हमारे हाथ लग गई है...

...अतः यह कलियुग का भगवान् साधारण इंसान मात्र ही रह गया है और जनता को इससे कोई खतरा नहीं रहा...

...वह देखिये, इसका सुदर्शन चक्र और विशेष पोशाक वह रहे।
गुड।

कुछ ही देर बाद चीफ मुखर्जी भी अपनी फोर्स के साथ वहां पहुंच गये और उन्होंने बेहोश फोमांचू को अपने कब्जे में ले लिया।
तुम दोनों को बहुत-बहुत मुबारक हो बेटे। तुम दोनों ने एक बार फिर बहुत बड़े कारनामे को अंजाम दिया है।
धन्यवाद अंकल।

अगले दिन तमाम अखबार वालों ने विशेष संस्करण निकाले, जिनमें राम-रहीम की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई थी।

सच बेटे, तुम इतने खतरनाक इंसान को इतनी आसानी से पकड़ लोगे, मैं तो ऐसा सपने में भी नहीं सोच सकती थी। पूरा अखबार ही तुम दोनों की तारीफों से भरा पड़ा है।

राम-रहीम नाश्ता करके जैसे ही उठे-

हैलो,
राम स्पीकिंग।
राम बेटे, गज़ब हो गया। रोमांचु लॉकअप से फरार हो गया है।

व्हाट? यह कैसे हुआ?

शायद उसके पास बेहोश करने वाला कोई कैप्सूल-बम था। इसी से वह पूरी पुलिस चौकी पर तैनात पुलिस कर्मियों को बेहोश कर भागने में सफल हो गया है।

ओह!
...ने निराशा से फोन रख दिया।

लो बेटा,
यह रहा तुम्हारा उपहार।

अरे! अचानक तुम्हारे चेहरे पर यह उदासी कैसे छा गई?
तब राम ने फोमांचू के फरार होने की बात बता दी।

सुनकर —
यह तो बहुत बुरा हुआ बेटा। पता नहीं फरार होकर अब वह क्या गुल खिलाये। हो सकता है, तुम्हें मारने की भी कोशिश करे...
...वैसे भी घायल शेर और ज्यादा खतरनाक होता है।

चिंता मत करो आंटी! जब वह हमसे उलझेगा, हम
भी उससे सुलट लेंगे...

... राम भइया, तुम यह डिब्बा खोलो। देखें तो सही एक अजनबी ने हमें उपहार में क्या दिया है?

राम ने डिब्बा खोला —
अरे! यह तो टेपरिकॉर्डर है और इसमें एक कैसेट भी चढ़ी हुई है।
हां। ठहरो, मैं इसे चालू करके देखता हूं।

शैतान भतीजों को उनके चचा का प्यार भरा नमस्कार!
प्यारे भतीजो, तुम लोगों की दिलदारी और बुद्धिमानी की दाद देता हूं। शायद अब तक तुम्हें मेरे फरार होने की खबर मिल चुकी होगी...

...यदि जानकारी नहीं मिली है तो अब जान लो। मैं तुम्हारी कमजोर चूहेदानी से निकल भागा हूं और फिलहाल तुमसे हार मानकर अपने देश जा रहा हूं...
...लेकिन यह मत समझ लेना कि मैं आसानी से तुम्हारी जान छोड़ दूंगा। आज के बाद मैं तुम दोनों की एक-एक कारगुजारी पर निगाह रखूंगा...

...और शीघ्र ही मैं तुम्हें तुम्हारी उद्दण्डता का दंड दूंगा। आज होली है, इसलिए मेरी ओर से तुम्हें होली की मुबारकबाद। अच्छा, फिर मिलेंगे।
के साथ आवाज आनी बंद हो गई।

लेकिन आवाज के बंद होने के साथ ही टेपरिकॉर्डर में एक हलका-सा धमाका हुआ...
धड़ाम्

...और-
हा-हा-हा!
क्या हुआ आंटी? आप हंस क्यों रही हैं?
जरा तुम दोनों अपनी-अपनी शक्लें शीशे में जाकर देखो।
और शीशे के सामने-
आंय! यह चचा तो जाते-जाते भी हमारा मुंह काला कर गया?
हां, काफी भद्दी होली खेली है उसने हमसे।
चिंता मत करो भइया। अगली मुलाकात में यदि मैंने भी जूते मार-मारकर उसका मुंह लाल नहीं कर दिया तो मेरा नाम भी रहीम दी ग्रेट नहीं।
समाप्त